<u>संपूर्ण समाधान- सभी के सुनहरे जीवन के लिए एक व्यवस्था</u>

कांसेप्ट -प्रेमजीत सिरोही
लेखक -अम्बरीश मिश्रा

हमारी दुनिया गरीबी, जलवायु परिवर्तन, आपसी संघर्ष और युद्ध जैसी गंभीर वैश्विक चुनौतियों का सामना कर रही है।आय में बढ़ती असमानता की खाई, सामाजिक बहिष्कार, हिंसा और सामाजिक मूल्यों के ह्रास के बारे में गहरी चिंताएँ हैं।हमारे शहर बिगड़ रहे हैं और सामाजिक अशांति बढ़ रही है।हम में सेअधिकांश विभिन्न तरह की असुरक्षा और परेशानियों का सामना कर रहे हैं। अगर हम एक दिशा निर्धारण एवं दिशा सुधार नहीं करते हैं, तो भविष्य में गंभीर खतरे पैदा होने की संभावना और बढ़ जाती है।

तो फिर, समाधान क्या है? हम एक ऐसी व्यवस्था कैसे बना सकते हैं जो स्थिरता, लोकतंत्र एवं शांति पैदा करे? हम सभी मनुष्य ही तो हैं और आख़िरकार मनुष्य ही प्राकृतिक श्रंखला में कुछ बदलाव करने की क्षमता रखते हैं। अंततोगत्वा ये सभी समस्याएं मानव सह-अस्तित्व के मामले हैं। हम मानव जीवन को कैसे जीने लायक और आनंददायक बना सकें , यह हमारी मूल समस्या है। यदि प्रणाली सभी नागरिकों को उनकी इच्छा का जीवन जीने में सक्षम बनाती है, तो वह एक सफल प्रणाली कहलाएगी। यदि संसाधनों का प्रबंधन अनुचित है, जो सभी लोगों को उस जीवन को जीने से वंचित कर देता है जो वे चाहते हैं, तो वह एक असफल प्रणाली कहलाएगी।

मौलिक रूप से, इसका मतलब है, कि हमें अपनी अर्थव्यवस्था और राजनीतिक व्यवस्था को बदलना होगा।आर्थिक और राजनीतिक ढांचे से तात्पर्य यहां पर है, हम संपत्ति का सृजन और वितरण कैसे करते हैं।यदि हम समाज में संपत्ति सृजन और वितरण का लोकतंत्रीकरण कर पाए तो हम मानव सह-अस्तित्व से जुडी एक महत्वपूर्ण समस्या को हल कर सकेंगे । सुखी जीवन के लिए ज़रूरी कारकों का अन्यायपूर्ण वितरण, सभी प्रकार की समस्याओं की ओर ले जाता है – जैसे प्रतिस्पर्धा, हिंसा, ईर्ष्या, लालच, अन्याय, भ्रष्टाचार, आपसी संघर्ष आदि।हमारे वर्तमान आर्थिक, राजनीतिक और शैक्षिक ढांचे का एक प्रतिस्पर्धी आधार है, जिसने मानव को एक अच्छे जीवन कीआशा दिखाकर एक दूसरे के खिलाफ खड़ा कर रखा है।सिस्टम केवल कुछ को ही अमीर बनाने में सक्षम है।वे आधी निचली जनसँख्या के संयुक्त धन से अधिक धन रखने वाले हैं। यदि भावना वश कोई भलाआदमी इस धन को त्याग भी देता है तो कोई और भला आदमी इसे धारण एवं संचालित करने के लिए तत्पर मिलेगा। क्योंकि अर्थतंत्र का मूल ढांचा ही कुछ ऐसा है।यदि आर्थिक ढांचा खुद ही अलोकतांत्रिक है, तो हम अपना जीवन किस तरह से अच्छे होने की उम्मीद कर सकते हैं? यदि नीतियां और निर्णय सभी नागरिकों के कल्याण के लिए नहीं हैं, तो हम सौहार्द पूर्ण सह-अस्तित्व की उम्मीद कैसे कर सकते हैं? यदि जीवन निरंतर लड़ाई, धमकीऔरअसुरक्षा से भरा है, तो ऐसे जीवन का क्या अर्थ है? अगर सामूहिक अस्तित्व तीतर बितर हो रहा है तो एक व्यक्तिगत जीवन पूरी तरह से कैसे खिल सकता है या सफलता को प्राप्त कर सकता है? जीवन में आनंद की प्राप्ति के लिए एक बड़े पैमाने पर सहयोग कीआवश्यकता होती है और सहयोग की स्थापना एक सोची समझी,पूर्ण प्रणाली में ही संभव है।

अगली व्यवस्था का एक डिज़ाइन – जिसे हम यूनिवर्सल लाइफ मैनेजमेंट कहते हैं – यह स्पष्ट करने में मदद करता है कि हम क्या चाहते हैं, और हम वहाँ कैसे पहुँचते हैं।यह विभिन्न प्रकार के,समाज जनित संपत्ति के निर्माण के लिए एक विकेंद्रीकृत – केंद्रीकृत दृष्टिकोण लेता है।यह अगली प्रणाली लोकतांत्रिक है, इसमें विविधता और एकरूपता दोनों है,और शासन एक <u>विकेन्द्रीगत- केंद्रीकृत</u> प्रणाली द्वारा प्रबंधित है।एक प्रणाली जिसमें सत्ता हर समय नागरिकों के पास रहती है और फिर भी प्रबंधन / प्रशासन का एक केंद्रीकरण है।यदि यह मॉडल अस्तित्व में आता है, तो अभी होने वाली समस्याएं जन्म लेने से दूर हो जाएंगी।इस से पहले कि हम विवरण में जाएं, हमें यह समझाने कीअनुमति दें

कि यह प्रणाली क्या वितरित करेगी।आइए जानें कि अगर इस प्रणाली को अपनाया जाए तो हमारे जीवन में क्या बदलाव आएगा?

प्रस्तावित परिणाम

1.जीवन आपकी इच्छा के अनुसार होगा

प्रत्येक व्यक्ति की सीखने, बनाने और उपभोग करने में रुचि केअपने विषय हैं।मनुष्यों को वांछित शिक्षा (ज्ञान) , वांछित रोजगार (कर्म) और वांछित उत्पादों / सेवाओं (भोग) और वांछित आराम (विश्राम) का लाभ उठाने से सुख की प्राप्ति होती है।प्रस्तावित मॉडल इस उद्देश्य को पूरा करता है।

आजके समय में दुनिया के व्यक्ति अपना समय या दूसरे शब्दों में अपना जीवन बलिदान करते हैं।नौकरी में गहरी रुचि के बिना भी श्रम की पेशकश करते हैं। व्यक्ति अपने और अपने परिवार के लिए जीवन की कुछ सुविधाओं का लाभ उठाने के लिए ऐसा करते हैं।आज हम अधिक पैसा कमाने के लिए काम कर रहे हैं।लेकिन मौजूदा प्रणाली का डिजाइन ऐसा है कि धन केवल कुछ लोगों के लिए उत्पन्न हो रहा है जो शीर्ष पर हो सकते हैं।इसलिए अगर आप कड़ी मेहनत करते हैं, तो भी कोई गारंटी नहीं है कि आप अमीर होंगे।क्योंकि अमीर कुछ लोग ही हो सकते हैं।अगर आप अमीर बन जाते हैं, तो भी कोई गारंटी नहीं है कि आप अमीर बने रहेंगे।यह जीवन को प्रतिस्पर्धी और तनाव से भरा बनाता है।

आजकुछ अमीर लोगों को कई सुख-सुविधाएं ज़रूर मिलती हैं, लेकिन वे भी असुरक्षा, अनिश्चितता, प्रदूषण और तनाव की दुनिया में काम करते हैं क्योंकि बहुसंख्यक वंचित हैं।वे सभी तत्व जो एक मानव जीवन को पूरा करते हैं,आनंद और संतोष लाते हैं, वे अमीर और संपन्न को भी अनुपलब्ध हैं।वे भी पूरी तरह से जीवन का आनंद नहीं ले पा रहे हैं।वांछित शिक्षा (प्रतिष्ठित ज्ञान), मनचाही नौकरी (कर्म), वांछित उत्पाद / सेवाएं (भोग) और वांछित आराम (विश्राम) सबसे अधिक संपन्न को भी उपलब्ध नहीं है।

ऐसा इसलिए है क्योंकि सुख के निर्माण में सामूहिक सहयोग की आवश्यकता होती है जो मानव सह-अस्तित्व की एक सक्षम प्रणाली द्वारा ही संभव है।लेकिन ऐसा सहयोग आज संभव नहीं है क्योंकि मौजूदा अर्थशास्त्र हमें प्रतिस्पर्धा की ओर ले जाता है।इस तरह की प्रतिद्वंदिता वैश्विक, सामाजिक, पारिवारिक एवं व्यक्तिगत स्तर तक मौजूद है , हर स्तर पर मौजूद है।

प्रस्ताव के अनुसार, प्रत्येक व्यक्ति आवश्यकता के अनुसार अपनी पसंद की शिक्षा, पसंद का रोजगार ,पसंद के उत्पाद और सेवाएं, प्राप्त करने में सक्षम होगा।इन सुविधाओं का लाभ उठाने के लिए धन की अनिवर्यिता नहीं होगी। प्रबंधन इस तरह से होगा कि एक व्यक्ति का कर्म दूसरे के लिए भोग बन जाएगा। इसलिए व्यक्तियों को इस प्रणाली के माध्यम से विभिन्न प्रकार के सुख, सुविधाएं निर्माण करने की सुविधा प्रदान की जाएगी। लोग स्वयं अपनी रुचि के अनुसार उनका उपभोग कर सकेंगे। किसी भी व्यक्ति कोअनिच्छा से श्रम नहीं करना पड़ेगा।

2. सभी व्यक्ति आर्थिक रूप से स्वतंत्र होंगे

गरीबों पर दान या दया करने की कोई आवश्यकता नहीं होगी, क्यूंकि कोई भी गरीब नहीं होगा।यह प्रणाली लोगों को उनके जीवन में वास्तविक समानता का अनुभव कराएगी । सभी व्यक्तियों को उनकी इच्छाओं को पूरा करने के लिए प्रणाली द्वारा समर्थित किया जाएगा और कोई भी अन्य व्यक्ति पर भार नहीं बनेगा या किसी व्यक्ति विशेष पर

सारी निर्भरता नहीं होगी। प्रत्येक व्यक्ति व्यवस्था से सीधे संबंध रखेगा और अपनी आवश्यकताओं के लिए व्यवस्था पर निर्भर करेगा।

इसलिए सभी स्थितियों में, व्यक्ति सिस्टम से प्राप्त ही कर रहा होगा, समाज हित में उसे किसी प्रकार का बलिदान नहीं देना होगा। व्यवस्था का ढांचा कुछ ऐसा होगा की स्वहित पूर्ति में जनहित स्वतःही हो जायेगा। जनहित इस व्यवस्था का उपोत्पाद है।

3.वास्तविक लोकतंत्र और समानता का अनुभव

उन सभी गतिविधियों को पूरा करने के लिए जिन्हें अकेले या परिवार द्वारा पूरा नहीं किया जा सकता है, सभी सामाजिक स्तर की गतिविधियों के निष्पादन के लिए सरकार नामक एक संस्था बनाने की आवश्यकता होती है।अब हमें ऐसी प्रणाली की आवश्यकता है जिसमें अधिकारों के निर्धारण में पूर्ण लोकतंत्र हो। प्रत्येक मानव के अधिकार समान होने चाहिए । भूमिका और जिम्मेदारी के निर्धारण में पात्रता, क्षमता, प्रतिभा, कौशल और रुचि को देखा जाना चाहिए।यहां "अधिकार " शब्द का अर्थ है – शिक्षा का अधिकार, रोजगार का अधिकार, सामाजिक सुख सुविधाओं का अधिकार और सुरक्षा का अधिकार।सुखी जीवन के लिए इन सभी कारकों की आवश्यकता होती है।यहां "भूमिका और जिम्मेदारी" शब्द का अर्थ है वह रोजगार जो किसी व्यक्ति की योग्यता, क्षमता, प्रतिभा, कौशल और रुचि के अनुसार दिया जाएगा।कोई भी कार्य तभी ठीक से पूरा किया जा सकता है, जब उपर्युक्त पाँच बिंदु मौजूद हों। अन्यथा कार्य कभी भी संतोषजनक ढंग से पूरा नहीं होगा और सभी के लिए दुख का कारण होगा, जबकि एक सांस्कृतिक प्रणाली का उद्देश्य सभी का सुख है।

तो प्रस्तावित समाधान ,बुद्धिपरक प्रणाली के दम पर, व्यक्तिगत पसंद के अनुसार इन अधिकारों और जिम्मेदारियों को देने में सक्षम होगा।सभी नागरिकों को शिक्षा, रोजगार, सुविधाएँ / सेवाएँऔर सुरक्षा प्राप्त होगी।

4. सभी प्रकार की सुरक्षा, स्वतंत्रता और शांति

सामूहिक सहयोग होने पर ही हम सभी प्रकार की खुशियाँ प्राप्त कर सकते हैं।यह सहयोग सही प्रणाली का एक परिणाम है जिसमें सुख पाने के व्यक्तिगत ड्राइव को बुद्धिपरक डिजाइन द्वारा प्रबंधित किया जाता है।समझदारी से डिज़ाइन किए गए ढांचे में, सभी प्रकार के लोग अपनी सही जगह पाते हैं । जीवन में स्वतंत्रता और संतोष अनुभव करते हैं। नियमों को तोड़ने की कोई आवश्यकता नहीं होती है और नागरिकों को दूसरों पर आश्रित होकर या कुटिल साधनों द्वारा दूसरों का शोषण करके सुख प्राप्त करने की कोई आवश्यकता नहीं होती।अल्पतम नियम होते हैं और जीवन को और आसान करने के लिए ही बनाये गए होते हैं।संसाधन सबके लिए पर्याप्त होते है और कोई भी अभावग्रस्त नहीं होता।वैश्विक स्तर से व्यक्तिगत स्तर तक संसाधनों की जमाखोरी और अवांछित संचय नहीं होता। नकारात्मकता , प्रतिस्पर्धा, अवांछित संचय, अभद्रता ,युद्ध, हथियारों के निर्माण , प्राकृतिक और मानव संसाधनों के दुरुपयोग , भ्रष्टाचार , भ्रम की स्थिति इत्यादि के कोई कारण नहीं होते।

उस व्यवस्था में विभिन्न प्रकार की नकारात्मकता व्यक्तियों के बीच उत्पन्न नहीं होगी, जो के आज संसाधनों के अनुचित वितरण के कारण उत्पन्न होती है। इस नकारात्मकता के कारण हर कोई अपनी सुरक्षा के लिए व्यवस्था कर रहा है जो अंततः युद्ध का रूप ले लेती है।जब हर कोई सुख-सुविधाओं का लाभ उठाएगा, तो भविष्य के लिए उनके भीतर सुरक्षा की भावना विकसित होगी।इससे सच्चाई, प्रेम, सहयोग, गर्मजोशी और एक-दूसरे के बीच विश्वास की

सकारात्मक भावनाएं पैदा होंगी।लोग सरकार और न्याय में विश्वास विकसित होता पाएंगे।अंततः एक बुद्धिमान संवेदनशील ढांचा वास्तविक लोकतंत्र को प्रबल करने में सक्षम होगा ताकि जीवन का आनंद सभी को मिल सके।

यह कैसे संभव है यह बाद के लेख में बताया गया है। लेकिन पहले हमें अर्थशास्त्र के मौजूदा मॉडल की सीमाओं को पहचानना होगा। हमें यह समझना होगा कि विश्वशांति, पर्यावरणीय स्थिरता और मानव कल्याण के वांछित परिणाम हमारे अर्थशास्त्र के मौजूदा मॉडल द्वारा क्यों संभव नहीं है। आइए जानें अगले लेख में ।